

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विध्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)—848125

बुलेटिन संख्या-८१

दिनांक- मंगलवार, १७ नवम्बर, २०२०



विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेदशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 30.0 एवं 18.7 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 78 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 49 प्रतिशत, हवा की औसत गति 3.9 कि०मी० प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पण 2.5 मि०मी० तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 8.1 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से०मी० की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 19.7 एवं दोपहर में 26.0 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा।

**मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(18-22 नवम्बर, 2020)**

- ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर०पी०सी०ए०यू०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 18-22 नवम्बर तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-
- पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान प्रायः साफ तथा मौसम क शुष्क रहने का अनुमान है।
- इस अवधि में अधिकतम तापमान 27 से 29 डिग्री सेल्सियस एवं न्यूनतम तापमान 13-15 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है।
- पूर्वानुमानित अवधि में पछिया हवा चलने का अनुमान है। औसतन 7-8 कि०मी० प्रति घंटा की रफतार से हवा चलने की संभावना है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 60 से 70 प्रतिशत तथा दोपहर में 30 से 40 प्रतिशत रहने की संभावना है।

● समसामयिक सुझाव

- गेहूँ की बुआई के लिए तापमान तथा अन्य मौसमीय परिस्थितियाँ अनुकूल है। किसान भाई अब सिंचित एवं समयकालीन गेहूँ की किस्मों की बुआई पुरु कर सकते है। खेत की तैयारी के समय 150-200 क्विंटल कम्पोस्ट, 60 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम फॉसफोरस एवं 40 किलोग्राम पोटास प्रति हेक्टेयर की दर से व्यवहार करें। बुआई हेतु पी०बी०डब्लू०-343, पी०बी०डब्लू०-443, सी०बी०डब्लू०-38, डी०बी०डब्लू०-39, एच०डी०-2733, एच०डी०-2824, के०-9107, के०-307, एच०यू०डब्लू०-206 एवं एच०यू०डब्लू०-468 किस्में उत्तर बिहार के लिए अनुषंसित है। बीज को बुआई से पहले 2.5 ग्राम बेबीस्टीन की दर से प्रति किलोग्राम बीज को उपचारित करें। छिटकबाँ विधि से बुआई के लिए प्रति हेक्टेयर 125 किलोग्राम तथा सीड ड्रिल से पंक्ति में बुआई के लिए 100 किलोग्राम बीज का व्यवहार करें।
- मौसम के अनुकूल रहने की संभावना को देखते हुए तैयार धान की कटनी तथा दौनी के कार्य को उच्च प्राथमिकता दे कर पूरा करने का प्रयास करें।
- रबी मक्का की बुआई प्राथमिकता से करें। इसके लिए संकर किस्में शक्तिमान 1 सफेद, शक्तिमान 2 सफेद, शक्तिमान-3 पीला, शक्तिमान 4 पीला, शक्तिमान-5 पीला, गंगा 11 नारंगी पीला, राजेन्द्र संकर मक्का 1, राजेन्द्र संकर मक्का 2 एवं राजेन्द्र संकर मक्का दीप ज्वाला तथा संकुल किस्में- देवकी सफेद, लक्ष्मी सफेद एवं सुआन पीला इस क्षेत्र के लिए अनुसंसित है। खेत की जुताई में 100-150 क्विंटल कम्पोस्ट, 60 किलोग्राम नेत्रजन, 75 किलोग्राम फास्फोरस एवं 50 किलोग्राम पोटास प्रति हेक्टेयर की दर से व्यवहार करें। बीज दर 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर तथा दूरी 60x20 से०मी० रखें।
- चना की बुआई के लिए मौसम अनुकूल है। बुआई के समय 20 किलोग्राम नेत्रजन, 45 किलोग्राम फॉसफोरस, 20 किलोग्राम पोटास एवं 20 किलोग्राम सल्फर प्रति हेक्टेयर की दर से व्यवहार करें। चना के लिए उन्नत किस्म पूसा-256, के०पी०जी०-59(उदय) एवं पूसा 372 अनुसंसित हैं। बीज को बेबीस्टीन 2.5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करें। 24 घंटा बाद उपचारित बीज को कजरा पिल्लू से बचाव हेतु क्लोरपाईरीफॉस 8 मि०ली० प्रति किलोग्राम की दर से मिलावें। पुनः 4 से 5 घंटे छाया में रखने के बाद राईजोबीयम कल्चर (पाँच पैकेट प्रति हेक्टेयर) से उपचारित कर बुआई करें।
- आलू की रोपाई प्राथमिकता से करें। कुफरी चन्द्रमुखी, कुफरी अशोका, कुफरी बादशाह, कुफरी ज्योति, कुफरी सिंदुरी, कुफरी अरुण, राजेन्द्र आलू- 1, राजेन्द्र आलू- 2 तथा राजेन्द्र आलू-3 इस क्षेत्र के लिए अनुसंसित किस्में हैं। बीज दर 20-25 क्विंटल प्रति हेक्टेयर रखे। पंक्ति से पंक्ति की दुरी 50-60 से०मी० एवं बीज से बीज की दुरी 15-20 से०मी० रखें। आलू को काट कर लगाने पर 2 से 3 स्वस्थ आँख वाले टुकड़े को उपचारित कर 24 घंटे के अन्दर लगावे। बीज को एगलॉल या एमीसान के 0.5 प्रतिशत घोल या डाइथेन एम० 45 के 0.2 प्रतिशत घोल में 10 मिनट तक उपचारित कर छाया में सुखाकर रोपनी करे। समूचा आलू (20-40 ग्राम) लगाना श्रेष्ठकर है। खेत की जुताई में कम्पोस्ट 200-250 क्विंटल, 75 किलोग्राम नेत्रजन, 90 किलोग्राम फास्फोरस एवं 100 किलोग्राम पोटास प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करें।
- पिछेती धान की कटाई कर राई की पिछेती किस्में राजेन्द्र अनुकूल, राजेन्द्र सुफलाम एवं राजेन्द्र राई पिछेती की बुआई कर सकते है। राई-तोरी-सरसों की फसल जो 15 से 20 दिनों की हो गयी है उसमें निकौनी तथा बछनी कर पौधे से पौधे की दुरी 12-15 से०मी० रखें।
- मक्का, मटर, मसूर एवं राजमा की 20 से 25 दिनों की फसलों में कजरा (कटुआ) पिल्लू की निगरानी करें। इस कीट के पिल्लू रात्री के समय निकलकर इन फसलों के छोटे-छोटे उग रहे पौधो पर चढ़कर पत्तियों तथा कोमल शाखाओं को काटकर खाती है एवं जमीन पर गिरा देती हैं जिससे पूरा पौधा ही सूख जाता है। यह पिल्लू अधिकतर दिन में भूमि के अन्दर दरारों में या ढेलों के नीचे छिपी रहती है और इन कटी शाखाओं को जमीन के अन्दर ले जा कर दिन में भी खाती है। यह खाती कम नुकसान अधिक करती है। इसकी रोकथाम के लिए खेत की सिंचाई करने पर इसके पिल्लू दरार से बाहर निकलते हैं एवं पक्षियों द्वारा षिकार हो जाते हैं। खड़ी फसलों में बीच-बीच में घास-फूस के छोटे-छोटे ढेर शाम के समय लगा देते हैं। रात्री में यह कीट फसलों को खाकर इसी ढेर में छिप जाती है। किसान सुबह में छिपे पिल्लू को चुनकर नष्ट कर दें। अधिक नुकसान होने पर क्लोरपायरीफॉस 20 ई०सी० दवा का 2.5 मि०ली० प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करे।

आज का अधिकतम तापमान: 29.0 डिग्री सेल्सियस,
सामान्य से 0.3 डिग्री अधिक

आज का न्यूनतम तापमान: 15.2 डिग्री सेल्सियस,
सामान्य से 0.9 डिग्री अधिक

(डॉ० गुलाब सिंह)
तकनीकी पदाधिकारी

(डॉ० ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकारी